दर्द पैदा करता है मीडिया का बदलता चेहरा!

- विकास कुमार जैन

मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है। पत्रकार इस स्तंभ का प्रहरी है। पत्रकार की भूमिका इसलिए महत्वपूर्ण नहीं है कि वह सूचना को आमजन तक पहुंचाने में अहम भूमिका अदा करता है। प्रेस और उसके प्रहरी की भूमिका इसलिए ज्यादा अहम है क्योंकि समय-समय पर मीडिया प्रशंसक और आलोचक दोनों ही जिम्मेदारियों का निर्वहन बखूबी निभाता है। प्रेस और पत्रकार को शासन-प्रशासन और जनता के बीच सेतु भी माना जाता है।

आलोचना, सत्ता और प्रशासन को निरंकुश होने से रोकती है। सुविचारित और तर्कसंगत फैसलों को उचित तरीके से जनता के बीच पहुंचाएं जाने से फैसलों के प्रति जनता का विश्वास बढ़ता है। पत्रकार, सरकार और समाज से उभय रूप से जुड़ा होता है। दोनों की खामियों पर पत्रकार मुखर रूप से बोलता है। पत्रकार और पत्रकारिता आलोचक और प्रशंसक के रूप में समाज और सरकार दोनों को सजग और जागरूक बनाए रखता है। पत्रकार और पत्रकारिता को समाज के कमजोर वर्ग की जुबान माना जाता है।

पत्रकारिता का इतिहास शताब्दियों पुराना है। आजादी की लडाई में तमाम पाबंदियों और अंग्रजों की जुल्म-ज्यादतियों के बावजूद मीडिया ने जो भूमिका निभाई, वह अविस्मरणीय और अतुलनीय है। समय के साथ पत्रकारिता और इसके स्वरूप में परिवर्तन आता गया। आधुनिक युग में पत्रकारिता में व्यावसायिक पुट भी आया है। इसका एक कारण बढ़ती हुई आवश्यकताएं भी हैं।

पत्रकार, जन-गण को समाज और सरकार की वास्तविकता से परिचय कराता है। बदलाव के दौर में पत्रकारिता आसान हुई है तो उसकी मुश्किलों में इजाफा भी हुआ है। पिछले कुछ सालों में पत्रकारों के उत्पीड़न की घटनाओं में वृद्धि हुई है। समाज में पत्रकारों के प्रति सकारात्मक धारणा में गिरावट ने इस पेशे की मुश्किलें बढ़ाई हैं।

पत्रकारिता क्षेत्र के अवमूल्यन ने भी पेशे में उपजे विकारों को बढ़ाया है। संपादक नाम की संस्था के ह्रास ने भी समूचे पत्रकारिता जगत की विशालता और मान-सम्मान को नुकसान पहुंचाया है। पत्रकारिता अब मिशन नहीं बचा है। व्यावसायिकता ने मीडिया को अपने आगोश में ले लिया है। औद्योगिक घराने में भी अब मीडिया के क्षेत्र में न केवल आ चुके हैं, बल्कि इस सम्मानीय पेशे पर अपना अधपित्य भी स्थापित कर चुके हैं।

ऐसा कतई नहीं है कि मीडिया शत-प्रतिशत अपना अस्तित्व खो चुका है अथवा खोने की कगार पर है। आज भी देश और प्रदेश में अनेक ऐसे मीडिया हाउसेस हैं, जहां विशुद्ध पत्रकारिता न केवल जीवित है, बल्कि चौथे स्तंभ की आन-बान और शान को जीवित रखे हुई है। ऐसे मीडिया हाउसेस की फेहरिस्त लंबी है, जिन्होंने मीडिया के ललाट पर चमचमाते तिलक को बनाकर रखा हुआ है।

हालांकि सिक्के का दूसरा पहलू यह भी है कि - पत्रकारिता के मूल सिद्धांतों के सूत्र, नयी पौध रूपी पत्रकार बिरादरी भूलने लगी है। इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता है कि स्वार्थ सिद्धी करने वाले मीडिया हाउसेस और पत्रकार भी हैं। पिछले कुछ सालों में समाज को झूठ परोसने की शिकायतें बढ़ी हैं। बदलते परिवेश में पत्रकारिता के सिद्धांतों को बदला जाना समाज के लिए काफी दुखदाई है।

दुनिया में सिर्फ भारत देश में सबसे ज्यादा अखबारों का प्रकाशन होता है। यद्यपि उतनी संख्या में ये पढ़े नहीं जाते हैं। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रा का मतलब जाने बिना ही कतिपय लोगों ने पत्रकार बन अखबार निकालना शुरू कर दिया है। वे अखबार क्यों निकालते हैं? दरअसल ऐसे तत्वों की मंशा स्वयंहित भर होता है। ऐसे लोगों को और उनके अखबार को समाज से कोई सरोकार नहीं रहता है। गत वर्ष केंद्र सरकार ने ऐसे कई अखबारों के पंजीयन तक निरस्त कर दिए थे। वर्तमान में नये पंजीयन पर भी रोक लगी हुई है।

पत्रकारिता के तीन रूप :

पत्रकारिता-कागज से शुरू हुई थी। इसके बाद उसका स्वरूप इलेक्ट्रानिक मीडिया के रूप में जमकर उभरा। अब वर्तमान में सोशल मीडिया हमारे सामने है यह नया मीडिया देश नहीं बल्कि समूची दुनिया में अपनी छाप छोड़ रहीं है। इसमें झूठ को बढ़ा चढ़ाकर समाज के सामने परोसा जा रहा है, जिसका सबसे ज्यादा दुरूपयोग देश की राजनीति कर रही है। यहां नेताओं की जुबान फिसली नहीं की सोशल मीडिया में उनकी जुबान को काला पानी की सजा तक सुना दी जाती है। इसलिए सोशल मीडिया पर नियंत्रण लगाने के लिए कोई खास इंतजाम शासन और न्याय पालिकायें नहीं कर सकी हैं। जबकि कुछ देशों ने इसका इस्तेमाल सही दिशा में नहीं करने पर काफी कड़े कानून तक तैयार कर दिए हैं।

(प्रस्तुति: मनुज फीचर सर्विस)

नोट: मनुज फीचर सर्विस में छपे लेखों के विचार लेखक के अपने हैं। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। यहां प्रकाशित सामग्री का उपयोग गैर व्यावसायिक कार्यों के लिए करने हेतु किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। मनुज फीचर सर्विस का उल्लेख अवश्य करें।